



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 690]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 22, 2010/पौष 1, 1932

No. 690]

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 22, 2010/PAUSHA 1, 1932

नागर विमानन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 2010

सा.का.नि. 1001(अ).—वायुयान नियम, 1937 का और संशोधन करने के लिए वायुयान (संशोधन) नियम, 2010, का प्रारूप, वायुयान अधिनियम, 1934 (1934 का 22) की धारा 14 की अपेक्षानुसार भारत सरकार, नागर विमानन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या सा.का.नि. 57, तारीख 16 मार्च, 2010 के द्वारा प्रकाशित किए गए थे, जिससे ऐसे सभी व्यक्तियों से जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशित होने के तीस दिन की अवधि की समाप्ति से पूर्व आक्षेप और सुझाव आमंत्रित करते हुए इसकी प्रतियां सार्वजनिक रूप से उपलब्ध करायी गई थीं;

और उक्त अधिसूचना की प्रतियां, तारीख 20 मार्च, 2010 को जनता को उपलब्ध करा दी गई थीं;

और विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर प्रारूप नियमों के संबंध में प्राप्त आक्षेपों या सुझावों पर विचार किया गया है;

अतः, अब केन्द्रीय सरकार, उक्त वायुयान अधिनियम की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए वायुयान नियम, 1937 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः—

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम वायुयान (छठा संशोधन) नियम, 2010 है।
- (2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. वायुयान नियम, 1937 में, -

- (i) नियम 3 में, खंड (33क) के पश्चात्, निम्नलिखित खंड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

"(33ख) 'अनुरक्षण' से ओवरहॉल, निरीक्षण, प्रतिस्थापन, दोष सुधार तथा उपांतरण या मरम्मत या जाँच में से कोई एक या इनके संयोजन सहित, किसी विमान की सतत उड़नयोग्यता सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित कार्यों का निष्पादन अभिप्रेत है" ;

- (ii) नियम 61 के लिए, निम्नलिखित नियम प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

"61. वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों का अनुज्ञापन - (1) केन्द्रीय सरकार, उन व्यक्तियों को, जो इस नियम में विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं को पूरा करते हैं, इस नियम में यथाउपबंधित अनुज्ञप्तियां, प्राधिकार पत्र या अनुमोदन या सक्षमता प्रमाणपत्र प्रदान कर सकेंगी।

(2) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञापन या प्राधिकार पत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए या उसके विस्तारण के लिए महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट प्ररूप में और रीति से आवेदन किया जाएगा ।

(3) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्तियां निम्नलिखित प्रवर्गों में प्रदान की जा सकेंगी, अर्थात्:-

- (क) प्रवर्ग क
- (ख) प्रवर्ग ख 1
- (ग) प्रवर्ग ख 2
- (घ) प्रवर्ग ग

(4) विमानों, हेलीकॉप्टरों, टर्बाइन और पिस्टन इंजिनों से संबंधित प्रवर्ग क और प्रवर्ग ख 1 में अनुज्ञप्तियां निम्नलिखित उप-प्रवर्गों में प्रदान की जा सकेंगी, अर्थात्:-

- (क) क 1 विमान टर्बाइन
- (ख) क 2 विमान पिस्टन
- (ग) क 3 हेलीकॉप्टर टर्बाइन
- (घ) क 4 हेलीकॉप्टर पिस्टन
- (ङ.) ख 1.1 विमान टर्बाइन
- (च) ख 1.2 विमान पिस्टन
- (छ) ख 1.3 हेलीकॉप्टर पिस्टन
- (ज) ख 1.4 हेलीकॉप्टर पिस्टन

(5) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति प्रदान करने हेतु आवेदक निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करेगा, अर्थात्:-

- (क) उसकी आयु 18 वर्ष से कम नहीं होगी;
- (ख) उसने मान्यता प्राप्त बोर्ड या विश्वविद्यालय से भौतिकी, रसायन और गणित के साथ 10 + 2 या उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो;
- (ग) उसने, महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट एक लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की हो:

परन्तु महानिदेशक, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए जिनका अधिरोपण करना वे उचित समझे, किसी आवेदक को लिखित परीक्षा से छूट दे सकेगा, यदि आवेदक को संविदाकारी देश द्वारा वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की हैसियत से कार्य करने के लिए अनुज्ञप्ति प्रदान की गई हो; और

(घ) उसके पास कम से कम निम्नलिखित व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए, अर्थात्:-

(i) प्रवर्ग क (कोई भी उप-प्रवर्ग) तथा प्रवर्ग ख 1 (उप-प्रवर्ग ख 1.2 और ख 1.4) के लिए - वायुयान पर चार वर्ष का व्यावहारिक अनुरक्षण अनुभव; और

(ii) प्रवर्ग ख2 और उप-प्रवर्गों ख1.1 तथा ख1.3 - वायुयान पर पाँच वर्ष का व्यावहारिक अनुरक्षण अनुभव;

परन्तु उपरोक्त (i) और (ii) में विनिर्दिष्ट अनुभव अपेक्षाएं ऐसे आवेदक के मामले में एक वर्ष तक कम होंगी जिसने नियम 133ख के अधीन अनुमोदित किसी प्रशिक्षण संगठन में संतोषजनक रूप से प्रशिक्षण पूर्ण किया हो या जिसने मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से अभियांत्रिकी में डिग्री प्राप्त की हो:

परन्तु यह और कि सिविल वायुयान अनुरक्षण पर्यावरण से बाहर अर्जित बारह वर्ष के व्यावहारिक वायुयान अनुरक्षण अनुभव को उपरोक्त (i) और (ii) में अधिकथित अपेक्षाओं के समकक्ष माना जाएगा; जिसमें सिविल वायुयान अनुरक्षण पर्यावरण में कम से कम एक वर्ष का सुसंगत प्रवर्ग का हाल का अनुभव हो;

(iii) बड़े वायुयान के संबंध में प्रवर्ग ग के लिए -

(क) बड़े वायुयान पर प्रवर्ग ख1.1, ख1.3 या ख 2 के विशेषाधिकारों का प्रयोग करते हुए या नियम 133 ख या उसके समायोजन के अधीन अनुमोदित संगठन में आधारिक अनुरक्षण में सहायक स्टाफ के रूप में तीन वर्ष का अनुरक्षण अनुभव; या

- (ख) बड़े वायुयान पर प्रवर्ग ख1.2, या ख1.4 के विशेषाधिकारों का प्रयोग करते हुए या नियम 133 ख या उसके समायोजन के अधीन अनुमोदित संगठन में आधारिक अनुरक्षण में सहायक स्टाफ के रूप में पाँच वर्ष का अनुरक्षण अनुभव;
- (iv) बड़े वायुयान से भिन्न वायुयान के संबंध में प्रवर्ग ग के लिए - प्रवर्ग ख1 या ख 2 के विशेषाधिकारों का प्रयोग करते हुए या नियम 133 ख या उसके समायोजन के अधीन अनुमोदित संगठन में आधारिक अनुरक्षण में सहायक स्टाफ के रूप में तीन वर्षों का अनुरक्षण अनुभव;
- (ड.) आवेदक, महानिदेशक या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य व्यक्ति के समक्ष, अनुज्ञप्ति के प्रवर्ग या उप-प्रवर्ग, जिसके लिए आवेदन किया गया है, के विशेषाधिकारों के प्रयोग की योग्यता का प्रदर्शन करेगा।
- स्पष्टीकरण. - इस उप-नियम के प्रयोजनों के लिए,-
- (i) "बड़ा वायुयान" से 5700 किलोग्राम से अधिक के भार वाला कोई विमान या बहु-इंजन युक्त कोई हेलीकॉप्टर अभिप्रेत है; और
- (ii) "सहायक स्टाफ" से अभिप्रेत है वे अनुज्ञप्तिधारी इंजीनियर या अनुमोदन धारक जो सर्विस रिलीज़ प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्राधिकृत नहीं है, किन्तु आधारिक अनुरक्षण पर्यावरण में अनुरक्षण कार्य करते हैं।
- (6) आवेदक, वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की अनुज्ञप्ति में विस्तार प्रदान करने को निम्नलिखित के लिए अपेक्षित होगा--
- (क) महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट समुचित विषय माड्यूलों में ज्ञान के स्तर के प्रदर्शन के लिए लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करना; और
- (ख) किसी अतिरिक्त प्रवर्ग या उप-प्रवर्ग की अनुज्ञप्ति प्रदान करने के लिए महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट सुसंगत प्रशिक्षण प्राप्त करना, अनुरक्षण अनुभव अर्जित करना और कुशलता प्रदर्शित करना।

(7) जो आवेदक किसी परीक्षा में असफल रहता है, उसे समुचित क्षेत्र में तीस दिन का या अन्य ऐसी किसी अवधि का जो महानिदेशक विनिर्दिष्ट करे, अतिरिक्त अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् ही ऐसी परीक्षाओं में पुनः बैठने की अनुज्ञा दी जाएगी।

(8) केन्द्रीय सरकार, वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति धारकों को, किसी नए वायुयान, इंजिन या प्रणाली, जिसे संगठन में लाया गया है और जो उसकी अनुज्ञप्ति या उसका अवमुक्ति प्रमाण पत्र जारी करने की परिधि के भीतर नहीं आती है, का अनुरक्षण करने के लिए प्राधिकृत कर सकती है, परन्तु महानिदेशक इस बात से संतुष्ट हो कि आवेदक को पर्याप्त ज्ञान, अनुभव और प्रशिक्षण प्राप्त है, और उसने महानिदेशक द्वारा यथाविनिर्दिष्ट ऐसी परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हैं।

(9) इस बात से संतुष्ट होने पर कि आवेदक को पर्याप्त ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण और कुशलता प्राप्त है और उसने महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट ऐसी परीक्षाएं पास कर ली हैं, केन्द्रीय सरकार, महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट प्रक्रियाओं के अनुसार वायुयान, इंजिन या संघटकों पर किए गए अनुरक्षण कार्य को प्रमाणित करने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमोदित संगठन में कार्यरत व्यक्तियों को अनुमोदन प्रदान कर सकती है।

(10) इस बात से संतुष्ट होने पर कि आवेदक को पर्याप्त ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण, सक्षमता और कुशलता प्राप्त है और उसने महानिदेशक द्वारा यथाविनिर्दिष्ट ऐसी परीक्षाएं पास कर ली हैं, तो केन्द्रीय सरकार, महानिदेशक द्वारा अनुमोदित फर्म में कार्यरत आवेदक को ऐसी विशिष्ट प्रक्रियाएं, जो वायुयान की उड़नयोग्यता को प्रभावित कर सकती हैं, निष्पादित करने के लिए सक्षमता प्रमाण पत्र प्रदान कर सकेगी।

(11) जब तक निलम्बित, प्रत्यावर्तित या निरस्त न हो,-

(क) कोई अनुज्ञप्ति, उसमें विनिर्दिष्ट अवधि के लिए, प्रत्येक मामले में पांच वर्ष की अधिकतम अवधि के अधीन रहते हुए, विधिमान्य बनी रहेगी, और नवीकरण के लिए आवेदन प्राप्ति पर एक समय पांच वर्ष की एक और अवधि के लिए नवीकृत की जा सकेगी;

परन्तु पर्यवसित अनुज्ञप्ति का नवीकरण केवल तभी किया जाएगा जब आवेदक ने ऐसी परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हों, जिन्हें महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए।

- (ख) प्रत्येक मामले में एक वर्ष की अधिकतम अवधि के अधीन रहते हुए प्राधिकार, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण पत्र, उसमें विनिर्दिष्ट अवधि के लिए विधिमान्य रहेंगे और नवीकरण के लिए आवेदन प्राप्त होने पर एक समय पर और एक वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया जा सकेगा, परन्तु आवेदक पिछले एक वर्ष में तीन मास की अवधि के लिए कार्यों के निष्पादन में लगा हो।

(12) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्तियों के विभिन्न प्रवर्गों के धारकों को निम्नलिखित विशेषाधिकार होंगे, अर्थात्:-

- (i) प्रवर्ग क अनुज्ञप्ति धारकों द्वारा अनुज्ञप्ति पर पृष्ठांकित वायुयान के प्रकार के लिए नियम 133 ख के अधीन अनुमोदित संगठन द्वारा जारी प्राधिकार पर विशेष रूप से पृष्ठांकित किए गए अनुरक्षण कार्यों की सीमाओं के भीतर लघु अनुसूचित लाइन अनुरक्षण तथा साधारण दोष सुधार के पश्चात सेवा अवमुक्ति का प्रमाण पत्र जारी करना। प्रमाणन विशेषाधिकार अनुज्ञप्ति धारक द्वारा स्वयं किए गए कार्य तक प्रतिबंधित होंगे।
- (ii) प्रवर्ग ख1 अनुज्ञप्ति धारकों द्वारा अनुज्ञप्ति पर पृष्ठांकित वायुयान के प्रकार के संबंध में उनकी प्रयोज्यता सिद्ध करने के लिए साधारण परीक्षणों के लिए अपेक्षित वायुयान संबंधी लाइन प्रतिस्थापनीय यूनिटों के प्रतिस्थापन सहित वायुयान संरचना, विद्युत संयंत्र, यांत्रिकी और इलेक्ट्रिकल प्रणालियों सहित अनुरक्षण के पश्चात सेवा अवमुक्ति का प्रमाण पत्र जारी करना। प्रमाणन विशेषाधिकार अनुज्ञप्ति धारक द्वारा स्वयं किए गए कार्य तक प्रतिबंधित होंगे।

स्पष्टीकरण,-

- (क) प्रवर्ग ख1 में, प्रवर्ग क का समुचित उप-प्रवर्ग स्वतः ही सम्मिलित होगा;
- (ख) माइक्रोलाइट वायुयान, ग्लाइडर, बैलून, या वायु-पोत को, प्रवर्ग क या प्रवर्ग ख1 में अनुज्ञप्ति धारण करने वाले वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर द्वारा प्रमाणित किया जा सकेगा।

- (iii) प्रवर्ग ख2 अनुज्ञप्ति धारकों द्वारा अनुज्ञप्ति पर पृष्ठांकित वायुयान प्रकार के वायुयान संबंधी एवं इलेक्ट्रिकल प्रणालियों के अनुस्क्षण के पश्चात सेवा अवमुक्ति प्रमाणपत्र जारी करना; और
- (iv) प्रवर्ग ग अनुज्ञप्ति धारकों द्वारा अनुज्ञप्ति पर पृष्ठांकित प्रकार के वायुयान के संबंध में आधारिक अनुस्क्षण के पश्चात सेवा अवमुक्ति प्रमाणपत्र जारी करना। विशेषाधिकार, सभी प्रणालियों सहित समस्त विमान पर लागू होते हैं:
- (13) प्रमाणन विशेषाधिकारों का प्रयोग केवल तभी किया जाएगा यदि-
- (क) विशिष्ट वायुयान प्रकार पर प्रवर्ग क अनुज्ञप्ति धारक ने इस प्रयोजन के लिए अनुमोदित अनुस्क्षण या वायुयान अनुस्क्षण इंजीनियर प्रशिक्षण संगठन द्वारा किए गए संगत प्रवर्ग क वायुयान प्रकार कार्य प्रशिक्षण को संतोषजनक रूप से पूरा कर लिया है और प्रदर्शित किया है;
 - (ख) महानिदेशक द्वारा अनुमोदित या अनुमोदित अनुस्क्षण प्रशिक्षण संगठन द्वारा आयोजित संगत प्रवर्ग ख1, ख2 या ग वायुयान प्रकार प्रशिक्षण में परीक्षा के संतोषजनक रूप से पूरा करने के पश्चात प्रवर्गों ख1, ख2 या ग लाइसेंस की दशा में उपयुक्त वायुयान टाइप रेटिंग को लाइसेंस में पृष्ठांकित किया जाता है ;
 - (ग) बड़े वायुयान से भिन्न वायुयान के लिए प्रवर्ग ख1, ख2 और ग को महानिदेशक द्वारा यथाविनिर्दिष्ट समुचित समूह रेटिंगो या विनिर्माता समूह रेटिंगों सहित पृष्ठांकित किया जाता है; और
 - (घ) पूर्ववर्ती चौबीस मास के भीतर वायुयान अनुस्क्षण अनुज्ञप्ति धारक ने वायुयान अनुस्क्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति के अधीन विशेषाधिकार के अनुसार या तो छह माह का अनुस्क्षण अनुभव अर्जित कर लिया हो या पहली बार अनुज्ञप्ति अर्जित की है।

- (14) (i) इस नियम के प्रवृत्त होने की तारीख से विधिमान्य वायुयान अनुस्क्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति धारक अपनी अनुज्ञप्ति के विशेषाधिकारों का प्रयोग

करना जारी रख सकेगा और इस नियम के अधीन महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए उपयुक्त प्रवर्ग में वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति को सीमा सहित या बिना सीमा के और अगली परीक्षा के बिना जारी किया जाएगा।

परन्तु ऐसे विशेषाधिकारों का प्रयोग महानिदेशक, नागर विमानन द्वारा विनिर्दिष्ट तारीख के बाद जारी नहीं रखा जाएगा।

(ii) कोई व्यक्ति, जिसने इस नियम की अधिसूचना की तारीख से पूर्व विद्यमान नियमों एवं प्रक्रियाओं के अधीन वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति को प्राप्त करने के लिए अर्हता प्रक्रिया प्रारंभ की थी, वह 31 दिसम्बर, 2012 तक इस प्रक्रिया को जारी रख सकेगा है और उसको समुचित प्रवर्ग में वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति जारी की जा सकेगी।

(15) इन नियमों के नियम 19 के उप नियम (3) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, केन्द्रीय सरकार, ऐसी जांच के पश्चात्, जैसी वह ठीक समझे, और सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर देने के पश्चात्, इस नियम के अधीन प्रदान की गई किसी अनुज्ञप्ति, प्राधिकार-पत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण पत्र को प्रत्यावर्तित, निरस्त, निलंबित या पृष्ठांकित कर सकेगी या चेतावनी या भर्त्सना जारी कर सकेगी या व्यक्ति को अस्थाई रूप से या स्थाई रूप से अनुज्ञप्ति अर्जित करने से वंचित कर सकेगी, जहां उसका यह समाधान हो गया है कि -

- (क) आवेदक ने अर्हता प्रक्रिया के दौरान अनुचित या छलपूर्ण साधनों का प्रयोग किया था; या
- (ख) धारक ने छलपूर्ण साधनों का प्रयोग करते हुए प्रमाणन विशेषाधिकारों को प्राप्त किया है; या
- (ग) धारक, संगठन या व्यक्ति, जिसके लिए अनुरक्षण किया जाना आशयित था, को ऐसे तथ्य की रिपोर्ट देने में असफलता के साथ स्व-निरीक्षण के परिणाम स्वरूप अपेक्षित अनुरक्षण करने में असफल रहा है; या
- (घ) धारक ने कार्य निष्पादित किया है या ऐसे कार्य के संबंध में प्रमाण पत्र प्रदान किया है जिसको सावधानीपूर्वक और सक्षम रीति से निष्पादित नहीं किया गया है या वायुयान की उड़न

योग्यता के साथ किसी भी प्रकार के समझौते के लिए उत्तरदायी था; या

- (ड़) धारक ने इस नियम के उल्लंघन में किसी भी मामले के संबंध में प्रमाण पत्र पर हस्ताक्षर किया है; या
- (च) धारक ने सेवा अवमुक्ति प्रमाण पत्र, यह जानते हुए जारी किया है कि सेवा अवमुक्ति प्रमाण पत्र पर विनिर्दिष्ट अनुरक्षण नहीं किया गया है या बिना सत्यापित किए किया है कि ऐसा अनुरक्षण किया गया है; या
- (छ) धारक ने अनुरक्षण अभिलेखों के साथ धोखाधड़ी की है; या
- (ज) धारक ने मद्यसार या किसी अन्य मादक या किसी मनोसक्रिय पदार्थ के प्रभाव में रहते हुए अनुरक्षण किया है या सेवा अवमुक्ति प्रमाण पत्र जारी किया है; या
- (झ) किसी अन्य कारण से यह अवांछनीय है कि धारक को, इस नियम के अधीन उसको प्रदान किए गए विशेषाधिकारों का, प्रयोग करता रहना चाहिए।

(16) केन्द्रीय सरकार, यदि अभिलिखित कारणों से लोकहित में ऐसा करना समीचीन समझती है तो अनुज्ञप्ति या प्राधिकार पत्र या अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण पत्र के प्रदान या नवीकरण को रोक सकेगी। ”

[फा. सं. ए. वी. 11012/1/2010-क]

प्रशांत सुकुल, संयुक्त सचिव

नोट: मूल नियम, राजपत्र में अधिसूचना सं. वी-26 तारीख 23 मार्च, 1937 द्वारा प्रकाशित किए गए थे और अंतिम संशोधन तारीख 17 सितम्बर, 2010 के भारत के राजपत्र के भाग II, खंड (3), उपखंड (i) में प्रकाशित सा.का.नि. 766 (अ) तारीख 17 सितम्बर, 2010 द्वारा किया गया ।

u859 GL/10-3

MINISTRY OF CIVIL AVIATION**NOTIFICATION**

New Delhi, the 22nd December, 2010

G.S.R. 1001(E).— Whereas the draft of Aircraft(Amendment) Rules, 2010 further to amend the Aircraft Rules, 1937, was published, as required by section 14 of the Aircraft Act, 1934 (22 of 1934), vide notification of the Government of India in the Ministry of Civil Aviation number G.S.R. 57, dated 16th March, 2010, for inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby before the expiry of the period of thirty days from the date on which copies of the Gazette of India in which the said notification was published, were made available to public;

And whereas copies of the said notification were made available to the public on the 20th March, 2010;

And whereas objections or suggestions have been received in respect of the draft rules within the period specified have been taken into consideration;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 5 of the said Aircraft Act, the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Aircraft Rules, 1937, namely: —

1. (1) These rules may be called the Aircraft (6th Amendment) Rules, 2010.
(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. In the Aircraft Rules, 1937,—
 - (i) in rule 3, after clause (33A), the following clause shall be inserted, namely:—

“(33B) “Maintenance” means the performance of tasks required to ensure the continuing airworthiness of an aircraft, including any one or combination of overhaul, inspection, replacement, defect rectification and the embodiment of a modification or repair or test;”;
 - (ii) for rule 61, the following rule shall be substituted, namely: —

“61. **Licensing of Aircraft Maintenance Engineers** — (1) The Central Government may grant licences, authorisations or approvals or certificates of competency as provided in this rule, to persons who meet the requirements specified in this rule.

(2) The application for the grant of an Aircraft Maintenance Engineer's Licence or an authorisation, approval or certificate of competency, or for extension thereof, shall be made in the form and manner specified by the Director-General.

(3) The Aircraft Maintenance Engineer's licences may be granted in the following categories, namely:-

- (a) Category A
- (b) Category B1
- (c) Category B2
- (d) Category C.

(4) The licences in categories A and B1, in relation to aeroplanes, helicopters, turbine and piston engines, may be granted in the following sub-categories, namely:-

- (a) A1 Aeroplanes Turbine
- (b) A2 Aeroplanes Piston
- (c) A3 Helicopter Turbine
- (d) A4 Helicopter Piston
- (e) B1.1 Aeroplanes Turbine
- (f) B1.2 Aeroplanes Piston
- (g) B1.3 Helicopter Turbine
- (h) B1.4 Helicopter Piston.

(5) An applicant for the grant of Aircraft Maintenance Engineer's Licence shall satisfy the following requirements, namely:—

- (a) he shall not be less than 18 years of age;
- (b) he shall have passed 10+2 examination with Physics, Chemistry and Mathematics from a recognised Board or University or its equivalent;
- (c) he shall have passed a written examination as specified by the Director-General:

Provided that the Director-General may, subject to such conditions as he may deem fit to impose, exempt any applicant from the written examination if the applicant holds a licence granted by a Contracting State to act in the capacity of an Aircraft Maintenance Engineer; and

- (d) he shall have the following minimum practical experience, namely:-
 - (i) for Category A (any sub-category) and Category B1 (sub-categories B1.2 and B1.4) – four years of practical aircraft maintenance experience; and

- (ii) for Category B2 and sub-categories B1.1 and B1.3 – five years of practical aircraft maintenance experience:

Provided that the experience requirement specified at (i) and (ii) above shall be reduced by one year in case of an applicant who has satisfactorily completed training in any training organisation approved under rule 133B or who has acquired a Degree in Engineering from a recognised University:

Provided further that twelve years of practical aircraft maintenance experience acquired outside a civil aircraft maintenance environment in the relevant category supplemented by at least one year of recent experience in civil aircraft maintenance environment,

shall be treated as equivalent to the requirements laid down in (i) and (ii) above;

- (iii) for Category C with respect to large aircraft –

(A) three years of maintenance experience exercising privileges of Categories B1.1, B1.3 or B2 on large aircraft or as support staff in a base maintenance in an organisation approved under rule 133B or a combination thereof; or

(B) five years of maintenance experience exercising the privileges of Categories B1.2 or B1.4 on large aircraft or as support staff in base maintenance in an organisation approved under rule 133B, or a combination thereof;

- (iv) for Category C with respect to aircraft other than large aircraft – three years of maintenance experience of exercising privileges of category B1 or B2 or support staff in an organisation approved under rule 133B, or a combination thereof;

- (e) the applicant shall have demonstrated to the Director-General or any other person authorised by him in his behalf, the ability to exercise the privileges of the category and sub-category of the licence for which the application has been made.

Explanation.— For the purposes of this sub-rule, –

- (i) “large aircraft” means any aeroplane with a maximum mass of more than 5700 kilograms or any multi-engined helicopter; and
- (ii) “support staff” means those licensed engineers or approval holders who are not authorised to issue certificate of release to service, but perform maintenance in the base maintenance environment.

(6) The applicant for grant of extension of Aircraft Maintenance Engineer's licence shall be required --

(a) to pass a written examination so as to demonstrate a level of knowledge in the appropriate subject modules as specified by the Director-General; and

(b) to undergo relevant training, acquire maintenance experience and demonstrate skill as specified by the Director-General, for grant of any additional category or sub-category of license.

(7) An applicant who fails in any examination shall be permitted to appear again for such examination only after acquiring additional experience of thirty days or such other period in the appropriate field as may be specified by the Director-General.

(8) The Central Government may grant authorisation to the holders of an Aircraft Maintenance Engineer's Licence to carry out maintenance of any new aircraft, engine or system which has been brought into the organisation and which is not within the scope of his licence, and to issue a certificate of release thereof, provided that the Director-General is satisfied that the applicant has sufficient knowledge, experience and training, and has passed such examinations as specified by the Director-General.

(9) Upon being satisfied that the applicant has sufficient knowledge, experience, training and skill and has passed such examinations as specified by the Director-General, the Central Government may grant approvals to persons employed in an organisation approved by Director-General to certify maintenance work carried out on aircraft, engine or components, in accordance with the procedures specified by the Director-General.

(10) Upon being satisfied that the applicant has sufficient knowledge, experience, training, competency and skill and has passed such examinations as specified by the Director-General, the Central Government may grant a Certificate of Competency to an applicant employed in a firm approved by Director-General to perform specialised processes which may affect the airworthiness of an aircraft.

(11) Unless suspended, revoked or cancelled, --

(a) a licence shall remain valid for the period specified therein, subject to a maximum period of five years in each case, and may be renewed for another five years at a time on receipt of the application for renewal:

Provided that an expired licence shall be renewed only after the applicant has passed such examinations as may be specified by the Director-General;

(b) an authorisation, approval or certificate of competency shall remain valid for a period specified therein, subject to a maximum period of one year in each case, and may be renewed for another one year at a time on receipt of application for renewal, provided the applicant has engaged himself in the performance of the tasks for a period of three months in the preceding one year.

(12) The holders of various categories of Aircraft Maintenance Engineer's Licenses shall have the following privileges, namely:-

- (i) Category A licence holders to issue certificates for release to service after minor scheduled line maintenance and simple defect rectification within the limits of maintenance tasks specifically endorsed on the authorisation issued by an organisation approved under rule 133B for the type of aircraft endorsed on the licence. The certification privileges shall be restricted to the work carried out by the licence holder himself.
- (ii) Category B1 licence holders to issue certificates for release to service after maintenance, including aircraft structure, power-plant, mechanical and electrical systems, including replacement of avionic line replaceable units requiring simple tests to prove their serviceability, in respect of an aircraft type endorsed on the licence. The certification privileges shall be restricted to the work carried out by the licence holder himself.

Explanation.-

- (a) Category B1 shall automatically include the appropriate sub-category of Category A;
 - (b) microlight aircraft, glider, balloon or an airship may be certified by an aircraft maintenance engineer holding a licence in Category A or Category B1.
 - (iii) Category B2 licence holders to issue certificates of release to service after maintenance on avionic and electrical systems of aircraft type endorsed on the licence; and
 - (iv) Category C licence holders to issue certificates of release to service after base maintenance in respect of an aircraft of the type endorsed on the licence. The privileges apply to the aircraft in its entirety including all systems.
- (13) The certification privileges shall be exercised only if —
- (a) the holder of Category A licence on a specific aircraft type has satisfactorily completed and demonstrated the relevant Category A aircraft type task training conducted by an approved maintenance or AME training organisation approved for the purpose;
 - (b) the licence is endorsed with the appropriate aircraft type rating in case of Categories B1, B2 or C licence after satisfactory completion of an examination in the relevant category B1, B2 or C aircraft type training approved by Director-General or conducted by an approved maintenance training organisation;
 - (c) categories B1, B2 and C license for aircraft other than large aircraft, is endorsed with the appropriate group rating or manufacturer group ratings as specified by the Director-General; and

- (d) within the preceding twenty-four months, the holder of an Aircraft Maintenance Licence has either acquired six months of maintenance experience in accordance with the privileges under the Aircraft Maintenance Engineer's Licence or has acquired the licence for the first time.

(14)(i) The holder of a valid Aircraft Maintenance Engineer's Licence on the date of coming into force of this rule may continue to exercise the privileges of his licence and shall be issued, with or without limitation and without further examination, an Aircraft Maintenance Engineer's Licence in the appropriate category under this rule subject to such conditions as may be specified by the Director-General:

Provided that exercise of such privileges shall not be continued beyond the date specified by DGCA.

(ii) Any person who has started a qualification process for obtaining an Aircraft Maintenance Engineer's Licence under the rules and procedures existing prior to the date of notification of this rule, may continue the process till 31 December, 2012 and may be issued an Aircraft Maintenance Engineer's Licence in the appropriate category.

(15) Without prejudice to the provisions of sub-rule (3) of rule 19 of these rules, the Central Government may, after such inquiry as it may deem fit and after giving a reasonable opportunity of being heard, revoke, cancel, suspend or endorse any licence or authorisation or approval or certificate of competency granted under this rule or issue a warning or an admonition or debar a person from acquiring a licence temporarily or permanently, where it is satisfied that —

- (a) the applicant had used unfair or fraudulent means during the qualification process; or
- (b) the holder has obtained the certification privileges by adopting fraudulent means; or
- (c) the holder has failed to carry out required maintenance resulting from own inspection combined with failure to report such fact to the organisation or person for whom the maintenance was intended to be carried out; or
- (d) the holder has performed work or granted a certificate in respect of work which has not been performed in a careful and competent manner or was responsible in any manner that compromised airworthiness of the aircraft; or
- (e) the holder has signed a certificate in respect of any matter in contravention of this rule; or

- (f) the holder has issued a certificate of release to service knowing that the maintenance specified on the certificate of release to service has not been carried out or without verifying that such maintenance has been carried out; or
- (g) the holder has falsified the maintenance records; or
- (h) the holder has carried out maintenance or has issued a certificate of release to service while under the influence of alcohol or any other intoxicating or any psychoactive substance; or
- (i) it is undesirable for any other reason that the holder should continue to exercise his privileges granted under this rule.

(16) The Central Government may withhold the grant or renewal of a licence or authorisation or approval or certificate of competency if, for reasons to be recorded in writing, it considers it expedient to do so in public interest."

[F. No. AV. 11012/1/2010-A]

PRASHANT SUKUL, Jt. Secy

Note: The principal rules were published in the Official Gazette vide notification number V-26, dated the 23rd March, 1937 and last amended by G.S.R.766(E) dated 17-09-2010 published in Part II, section (3), sub-section (i) of the Gazette of India dated the 17th September, 2010.